विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ दिनांक -17-09-2020

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -6 हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविता के बारे में अध्ययन करेंगे।

कुछ पत्तियों का अर्थ कल स्पष्ट किए थे आज उसके आगे स्पष्ट करेंगे।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंचखोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : हमारी इच्छा यह थी कि हम नीले आसमान की सीमा (क्षितिज) तक उड़ते। अपनी लाल किरण जैसी चोंच खोलकर हम तारे (तारक) जैसे बिखरे हुए अनार के दाने खाते (चुगते) ।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : सीमाहीन (जिसकी कोई सीमा नहीं है) क्षितिज (जहाँ धरती और आसमान मिलते हैं) तक पहुँचने की हमारे पंखों में (विभिन्न पक्षियों के) प्रतियोगिता होती। या तो हम क्षितिज तक पहुंच जाते या हमारी साँस फूल जाती (तनती साँसों को डोरी) ।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : भले ही हमें पेड़ की टहनियों पर घोसलों (नीड़) में न रहने दो और हमारे रहने के स्थान (आश्रय) भी नष्ट (छिन्न - भिन्न) कर डालो। पर हमें पंख दिए है (भगवान ने) तो हमारी बैचैन (आकुल) उड़ान में रुकावट (विघ्न) ना डालो।

प्रश्न : भाव स्पष्ट कीजिए -" या तो क्षितिज मिलन बन जाता, या तनती साँसों की डोरी।"

उत्तर : पक्षी कहना चाहते हैं की जब वो क्षितिज को छूने की दौड़ लगाते तो या तो वो क्षितिज को प्राप्त कर लेते या थक जाते ,अर्थात बहुत दूर दूर तक सफलता पूर्वक उड़ते और थक कर हांफने लगते पर हर हाल में आनंदित होते।

लिखकर याद करें।